Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2019, VOL- 6/49

प्रकृति का असंतुलनकारी स्वरूप – पर्यावरण के लिए घातक

पद्मा त्रिपाठी, Ph. D.
एसो प्रोफेसर–अर्थशास्त्र, के. के. महाविद्यालय, इटावा

Abstract

पृथ्वी पर अवतरण करने वाले जीवों में सबसे अधिक बुद्धिमान मनुष्य ही है जिसने प्रगति की दौड़ में अपने स्वार्थ सिद्ध हेतु अनेक विवेकहीन कार्य किये हैं जो उसके सम्पूर्ण विनाश का कारक बनते जा रहे हैं। यह विवेकहीन कार्य है प्रकृति का संतुलन बिगाड़ना। पुराने समय में मानव जाति को सबसे अधिक खतरा युद्ध से था किन्तु अब पर्यावरण प्रदूषण का खतरा समस्त भूमण्डल में व्याप्त प्राणियों तथा वनस्पतियों पर मंडरा रहा है। अनेक प्राकृतिक आपदाओं के कारण स्थिति बहुत ही भयावह हो गयी है। यदि सभी राष्ट्रों को मिलकर सोचना होगा और प्रकृति बचाव के लिये ठोस कदम उठाने होंगे।

पारिभाषिक शब्दः *असंतुलनकारी, क्रियाकलाप, प्रकृति बचाव, संरक्षण–नीतियॉ ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

विश्लेषण,विवेचना एवं निष्कर्षः मानव तथा पर्यावरण का बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि मानव अपनी समस्त क्रियाकलाप प्रकृति के प्रांगण में करता है। यदि इन क्रियाओं का सामन्जस्य न रहा तो क्या होगा? इसलिए प्रत्येक मानव को पर्यावरण के बारे में जानना बहुत आवश्यक है।

पर्यावरण में पाये जाने वाले सभी अवयव जो हमारे चारों तरफ विद्यमान हैं, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश आदि जीवों के वृद्धि तथा विकास में सहायक होते हैं। माना जाता है कि प्राणियों का अस्तित्व प्राकृतिक घटकों के सन्तुलन का ही परिणाम है। जिन ग्रहों पर घटकों में संतुलन नहीं था वहां पर जीवन नहीं है यदि हमने प्राकृतिक घटकों का संतुलन बिगाड़ा तो क्या होग, परिणाम सामने है।

प्रकृति में परिवर्तन होते रहते हैं जिसका प्रभाव जीवों पर पड़ता है, यदि परिवर्तन प्रकृति के ढंग से हुआ तो जीवन अपने को परिस्थितियों के अनुसार गुण विकसित कर संतुलित हो जाता है और यदि मानवीय कारणों से परिवर्तन होता है तो प्रकृति के अनुसार सामन्जस्य बनाना कठिन हो जाता है। मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्राकृतिक अवयवों का लगातार अंधाधुंध दोहर कर रहा है जिससे प्रकृति के लिये खतरा उत्पन्न हो रहा है। बढ़ता हुआ औद्योगीकरण, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि, अनुपयुक्त तकनीकी का प्रयोग, मृदा तथा जल संसाधनों का अनुपयुक्त अंधाधुंध दोहन, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों का अनुचित प्रयोग, अवशिष्ट पदार्थों का मृदा में

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निस्तारण, वाहनों की बढ़ती संख्या, ऊर्जा की अधिक खपत तथा वनों का विनाश आदि मनुष्य की देन है। अनुमान लगाया जा रहा है कि सन् 1800 से अब तक पृथ्वी की सतह के तापमान में 0.74^0C की बढ़ोत्तरी हुई है और सन् 2100 तक $1.8 - 4^0C$ बढ़ने का अनुमान है।

पिछले 100 सालों में वैश्विक दर की तुलना में ध्रुवों का तापमान दो गुना (200%) तक वृद्धि हुई है। इसी प्रकार समुद्र तल सन् 2100 तक $1.8 – 5.9$ सेमी. बढ़ोत्तरी के अनुमान हैं। बीसवीं सदी में यह तल लगभग 10 –. 20 सेमी. बढ़ा है। इसी प्रकार भारत के उत्तर में बर्फ की आंधी तथा अमेरिकी तथा यूरोपीय देशों में बढ़ी बर्फवारी मौसम चक्र की गड़बड़ी का ही कारण है जिसके कारण हमारे सैनिकों को जान गंवानी पड़ी है जिस पर सोचना अत्यधिक आवश्यक है।

स्वस्थ पर्यावरण ही जीवन का आधार है। किसी भी प्रकार का प्राकृतिक असंतुलन मानव जीवन के लिए खतरा हो सकता है। इस आधुनिकता के युग में परिवर्तन बहुत ही तेजी से हो रहा है जो सोचनीय है। अब प्रत्येक मनुष्य समझ गया है कि बढ़ता हुआ जल, वायु, मृदा प्रदूषण हमारे लिए कितना जहर घोल रहा है। लेकिन फिर भी हम हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं। जो भी राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास हो रहे हैं वह नाकाफी हैं। सारी योजनायें चाहे वह यू.एन.सी.सी.सी. 1992 का ब्राजील के रियो–डी–जिनेरियो का सम्मेलन हो। 1997 का क्योंटा प्रोटोकाल हो, कोपेनहेगन की 15वीं बैठक हो या कानकुन की 16वीं बैठक हो। सभी का नतीजा शून्य निकला है। विकसित देशों ने अपनी मजबूरी दिखाकर सारी जिम्मेदारी विकासशील देशों पर डाल दी है। सभी देशों की सामूहिक बैठकों का नतीजा कुछ भी निकले लेकिन अब हमें अपनी धरा को बचाने के लिए आगे आकर प्रयास करना चाहिए और सभी में जागरूकता पैदा करना चाहिए कि मौसम में यह बदलाव क्यों दिखाई दे रहा है।

हमारे ग्लेशियर क्यों पिघल रहे हैं। गर्मियों में अधिक गर्मी तथा सर्दियों का अन्तराल कम क्यों हो रहा है। बिन मौसम बरसात क्यों हो रही है। समुद्र में प्रत्येक समय कोई न कोई हलचल क्यों हो रही है। सुनामी क्यों आ रही है। असमय बाढ़ क्यों आ रही है। कहीं न कहीं प्रतिदिन भूकम्प क्यों आ रहे हैं। ज्वालामुखी क्यों फूट रहे हैं। अत्यधिक बर्फबारी क्यों हो रही है। जीव जन्तु क्यों विलुप्त हो रहे हैं। नयी–नयी लाइलाज बीमारियाँ क्यों आ रही हैं। भूमि बंजर क्यों हो रही है। पेयजल संकट क्यों आ रहा है। जड़ में देखा जाए तो इनका कारण पर्यावरण के साथ हो रही मानव के द्वारा छेड़छाड़ ही है। जिसे रोककर प्रकृति के असंतुलन को बचाना चाहिए और अब भी हम नहीं जागे तो हमारे तथा हमारी पीढ़ी के लिए संकट बहुत ही भयावह होगा। आज विश्व में प्रतिवर्ष लगभग 9 मिलियन लोग प्रदूषणजन्य बीमारियों से मर रहे हैं। प्रदूषण द्वारा होने वाली विभिन्न बीमारियाँ मानव जीवन के लिए खतरे का संकेत है जिसे निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है–

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका नम्बर–1

प्रदूषण	विभिन्न बीमारियाँ
वायु प्रदूषण	**मानव में–** WHO के अनुसार लगभग 7 मिलियन लोग वायु प्रदूषणजन्य बीमारियों से मर रहे हैं जिसमें श्वांस रोग, फेफड़ों की कोशिकाओं में जलन, सीने में दर्द, फेफड़ों का केंसर, आँख में जलन, त्वचा रोग तथा कैंसर मानसिक व्याग्रता, हीमोफीलिया, पेट सम्बन्धी रोग, वृक्क रोग, वृक्क कैंसर, मधुमेह, रक्तचाप का बढ़ना आदि है। **पौधों में–** पत्तियों के किनारे झुलस जाना, क्लोरोफिल की कमी, पौधों की वृद्धि रुकना, फलों का पकने से पहले गिरना, ऊतक क्षय, आम, अंगूर, कपास के फलों में क्षति होना आदि।
जल प्रदूषण	जीवाणु जनित रोग– इसके द्वारा प्रतिवर्ष 1.5 मिलियन लोग विभिन्न बीमारियों से ग्रसित होकर जीवन नष्ट कर रहे हैं। हैजा, टाइफाइड, पेचिश। विषाणु जनित रोग– अमीबियोसिस, मरकरी, लैड, आरसैनिक, कापर, जिंक, क्रोमियम आदि सीधे व भोजन द्वारा मानव में पहुंचकर कैंसर, यकृत व गुर्दों में विकृति, पाचन सम्बन्धी रोग पैदा कर रहे हैं।
मृदा प्रदूषण	लगभग सभी भारी धातुएँ, निकिल, क्रोमियम, कैडमियम आदि मानव शरीर पर विषाक्त प्रभाव डाल रही हैं जिससे फेफड़ों का कैंसर, तंत्रिका तंत्र में कमी, आंतों में दर्द, गुर्दों का निष्क्रिय होना, रक्तदाब का बढ़ना, शरीर के विभिन्न अंगों में कैंसर आदि रोग हो रहे हैं। रेडियोधर्मी सी.सी.एम. 13, स्ट्रासियम–90, घास तथा वनस्पतियों में अवशोषित होकर पशुओं तथा मानव में पहुंच रहे हैं जो विभिन्न बीमारियों को बढ़ावा दे रहे हैं।
ध्वनि प्रदूषण	श्रवण शक्ति पर प्रभाव, चपापचय क्रियाओं में असंतुलन, रक्त वाहिनियों का संकुचन, हृदय गति का असंतुलन, पाचन विकृति, मानसिक उत्तेजना, उच्च रक्तचाप, एकाग्रता में कमी, गर्भस्थ शिशुओं का बहरापन, कान दर्द, कान झिल्लियों का फटना आदि।

तीव्र गति से बढ़ते हुए औद्योगीकरण के कारण विभिन्न देशों में समय–समय पर होने वाली विभिन्न त्रासदियाँ प्राकृतिक असन्तुलन के कारण ही सम्भव हुई हैं जिसमें अनेक लोग असमय काल कवलित हो गये हैं। तालिका–2 में गैस रिसाव के कारण हुई दुर्घटनाओं से औद्योगीकरण का प्रभाव स्पष्ट झलकता है–

तालिका नम्बर–2

क्र. सं.	वर्ष	स्थान	मृतकों की संख्या
1.	1930, दिसम्बर	मिमसधार (बेल्जियम)	63
2.	1948, अक्टूबर	डोनारा यू.एस.ए.	20
3.	1948, नवम्बर	लन्दन	800
4.	1950, नवम्बर	पोजारिका (मैक्सिको)	22
5.	1952, दिसम्बर	लन्दन	4000
6.	1953, नवम्बर	न्यूयार्क	250
7.	1956, जनवरी	लन्दन	1000
8.	1957, दिसम्बर	लन्दन	800
9.	1959, जनवरी	लन्दन	250
10.	1962, दिसम्बर	लन्दन	700
11.	1963, जनवरी	लन्दन	700
12.	1963, जनवरी	न्यूयार्क	400
13.	1966, नवम्बर	न्यूयार्क	170
14.	1984, दिसम्बर	भोपाल (भारत)	2500
15.	1986, अप्रैल	चेरनोविल (यूक्रेन)	2500
16.	2017 जनवरी	टेक्सास अमेरिका	4

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

21वीं सदी की सबसे बड़ी प्राकृतिक त्रासदी सुनामी को हम लोग अभी नहीं भूले हैं जिससे लाखों लोग बेघर हुये थे तथा लाखों मौतें हुई थीं। इसके अलावा समय–समय पर भूकम्प का आना, ज्वालामुखी का फटना, बाढ़ आना, तूफान आना, सूखा पड़ना हमें यह संकेत देता है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ मत करो, संभल जाओ। उपर्युक्त त्रासदियों की तीव्रता को संक्षेप में तालिका नम्बर–3 द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है–

तालिका नम्बर–3

त्रासदियाँ	**वर्ष**	**प्रभावित क्षेत्र**	**हताहत जनसंख्या (तीव्रता रि. स्केल) लाखों में**
सुनामी	1881, 31 दिसम्बर	भारत	7.5
	1941, 26 जून	भारत	8.5
	1956	जापान	
	2004, 26 दिसम्बर	सुमात्रा, इण्डोनेशिया भारत, श्रीलंका, थाइलैण्ड	8.9
	2010, 26 अक्टूबर	सुमात्रा, इण्डोनेशिया	8.5
	2011	टोकियो (कुकूसिया)	
भूकम्प	2004	हिन्द महासागर	2.29000 लोग (9.1–9.3)
	2005	कश्मीर (पाक)	79000 लोग (7.6–7.7)
	2006	जावा	हजारों लोग (7.7)
	2008	चीन	61,150 लोग (7.9)
हैती	2010, 12 जनवरी		1–3.16 लाख
	2015	नैपाल	8964
ज्वालामुखी	1953	तेनजीवी	लाखों लोग
	1985	अरमीरो	पूरा शहर दब गया (23000 लोग)
बाढ़	1931	चीन (हुआग ही नदी)	8 लाख से 40 लाख लोग मरे
	1993	यूनाइटिड स्टेट	14 मि. लोग बेघर हुए
	1998	चीन (यागटिज नदी)	लाखों लोग
	2000	मोजाम्बिक	लाखों लोग हताहत
	2010	पाकिस्तान	फसल नष्ट
	2010	चीन	
	2011	रिओ	
चक्रवात	1970 (बोला चक्रवात)	पाकिस्तान (अब बंगला देश)	हजारों लोग
	1975 (टाइफून नैना)	न्यू ओरलीन	हजारों लोग
सूखा	1900	भारत	2.5–3.25 मि. मरे
	1921–22	सोवियत यूनियन	5 बिलियन प्रभावित
	1928–30	चीन	3 मि. मरे
	1936–41	चीन	5 मि. मरे
	2006	आस्ट्रेलिया	लाखों लोग मरे
	2006	चीन	8 मि. लोग मरे
	2011	पूर्वी अफ्रीका	9.5 मि. लोग प्रभावित हुए
	2016 तक	भारत	330 मिलियन

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इसके अतिरिक्त अनेक प्राकृतिक आपदाओं के कारण स्थिति बहुत ही भयावह हो गयी है। यदि सभी राष्ट्रों ने मिलकर नहीं सोचा और प्रकृति बचाव के लिये ठोस कदम न उठाया तो कुछ भी नहीं बचेगा।

सन्दर्भ सूचीः

1. *त्रिपाठी, आर.के. (2001),* *वायु प्रदूषण का मानव व वनस्पतियों पर प्रभाव पृष्ठ 27–29, राष्ट्रीय संगोष्ठी 5–7 फरवरी, जनता कालेज, बकेवर (इटावा)*
2. *दैनिक जागरण (2010)* *एक उम्मीद नई सी 1 दि. 2010*
3. *विकीपीडिया (2010)* *www.nps.gov>nature>flood 2015*
4. *दैनिक जागरण (2011)* *प्रकृति का बदला, 2 फरवरी 2011*
5. *पाल, विजय नारायण (2011)* *पर्यावरण असन्तुलन*
6. *विकीपीडिया* *https/en.m.wikipedia.org>wiki>april 2015*

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies